संस्थागत भ्रष्टाचार कांग्रेस की देन

नयी दिल्ली। कांग्रेस पर फैमिली पैकेज भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाते हुए भाजपा ने बुधवार को दावा किया कि 70 सालों में संस्थागत भ्रष्टाचार कांग्रेस की देन रहा है और पिछले 24 घंटों में समाचार माध्यमों से सामने आए तथ्य दर्शाते हैं कि कैसे गांधी-वाड्रा परिवार ने पारिवारिक भ्रष्टाचार को परिभाषित किया है।

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने संवाददाताओं से कहा कि पूर्ववर्ती संप्रग सरकार में रक्षा से संबंधित सौदे और पेट्रोलियम संबंधित सौदे में संजय भंडारी और सी सी थंपी के तार जुड़े हैं। उन्होंने दावा किया कि इन सौदों की जांच में पता लगता है कि जीजाजी के साथ साले साहब भी पारिवारिक भ्रष्टाचार में शामिल हैं। कांग्रेस अध्यक्ष पर निशाना साधते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि जमीन की खरीददारी से संबंधित इन दस्तावेजों से ये बात सामने आई कि एच एल पाहवा के साथ राहुल गांधी के आर्थिक संबंध हैं स्मृति ईरानी ने जोर दिया कि एच एल पाहवा के यहां हुई छापेमारी में चौकाने वाली बात ये है कि उनके पास जमीन की खरीद फरोख्त के लिए पैसे नहीं थे। उन्हें जमीन खरीदने के लिये रुपये दिये गए थे। उन्होंने दावा किया कि एक समाचार सूत्र के माध्यम से राष्ट्र को जानकारी मिली है कि एच एल पाहवा नाम के एक व्यक्ति के यहां प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी में उसके पास से राहुल गांधी के साथ लेनदेन के दस्तावेज मिले हैं। केंद्रीय मंत्री ने आरोप लगाया कि 70 सालों में संस्थागत भ्रष्टाचार कांग्रेस की देन रही है। लेकिन पिछले 24 घंटों में समाचार माध्यमों से जो तथ्य आए हैं वो दर्शाते हैं कि कैसे गांधी-वाड्रा परिवार ने पारिवारिक भ्रष्टाचार को परिभाषित किया है। उन्होंने जोर दिया कि रार्बट वाड्रा के खिलाफ जांच जारी है और मीडिया में जो रिपोर्ट आ रही है, उसमें मिसेज वाड्रा का उल्लेख भी मिलता है।

भाजपा और अगप असम में मिलकर लड़ेंगी चुनाव

गुवाहाटी। नागरिकता (संशोधन) विधेयक के मुद्दे पर दो महीने पहले भाजपा से अपने संबंध समाप्त करने के बाद असम गण परिषद (अगप) अब भगवा दल के साथ मिलकर लोकसभा चुनाव लड़ेगी। भाजपा महासचिव राम माधव, अगप अध्यक्ष अतुल बोरा और अन्य के साथ कल मध्यरात्रि के बाद तक चली बैठक में गठबंधन को अंतिम रूप दिया गया। बुधवार की सुबह भाजपा के पूर्वोत्तर प्रभारी माधव ने ट्वीट किया, बैठक के बाद भाजपा और अगप ने आने वाले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को हराने के लिए साथ काम करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा, गुवाहाटी में भाजपा के नेता हेमंत विश्व शर्मा और अगप के अतुल बोरा और केशव महंत की उपस्थिति में यह घोषणा हुई। माधव ने बताया कि गठबंधन में तीसरा सहयोगी बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) है। गठबंधन के बाद बोरा ने संवाददाताओं से कहा कि कांग्रेस को हराने के लिए पहले के सहयोगी फिर से साथ आ गए हैं। हालांकि अगप प्रमुख ने नागरिकता (संशोधन) विधेयक और चुनाव के दौरान इस मुद्दे पर पार्टी के रुख को लेकर पूछे गए किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। अगप ने नागरिकता (संशोधन) विधेयक पर कदम उठाने को लेकर असम में भाजपा सरकार से अपना समर्थन जनवरी में वापस ले लिया था। इस विधेयक में बांग्लादेश, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के गैर मुस्लिम लोगों को भारत में छह साल तक रहने के बाद नागरिकता देने की बात कही गई है। इसका विरोध करते हुए अगप ने सार्वजनिक तौर पर भाजपा नेतृत्व की आलोचना की थी। असम में 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 14 सीटों में से सात पर जीत दर्ज की थी जबकि कांग्रेस और एआईयूडीएफ ने तीन-तीन सीटों पर जीत दर्ज की। एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार को जीत मिली थी। बीपीएफ और अगप का कोई उम्मीदवार जीत नहीं पाया था।

टेरीजा मे की ब्रेक्जिट योजना को सांसदों ने किया खारिज

लंदन। ब्रिटेन की प्रधानमंत्री टेरीजा मे को यूरोपीय संघ (ईयू) से अलग होने की योजना पर ब्रिटेन की संसद में एक बार फिर मुंह की खानी पड़ी है। ब्रेक्जिट के लिए ईयू के साथ तय समय सीमा के 17 दिन पहले ब्रिटेन की सांसद के निचले सदन, हाउस आफ कामन्स ने मंगलवार को प्रस्तावित समझौते को मत-विभाजन में भारी अंतर से खारिज कर दिया।

संसद में ब्रेक्जिट योजना के नकारे जाने से देश में एक बार फिर राजनीतिक अनिश्चिता के बादल दिखायी दे रहे हैं। हाऊस ऑफ कॉमंस ने मे सरकार के प्रस्ताव को 242 के मुकाबले 391 वोटों से खारिज किया। जनवरी में सदन ने पहले प्रस्ताव को 230 मतों के अंतर से खारिज किया था। इस मतदान के परिणाम के बाद प्रधानमंत्री मे ने तत्काल 'हाउस ऑफ कॉमंस' को सूचित किया कि बुधवार को संसद एक नए प्रस्ताव पर मतदान करेगी। इस प्रस्ताव में ब्रिटेन के 29 मार्च तक यूरोपीय संघ को बिना किसी समझौते के छोड़ना चाहिये या नहीं के बारे में फैसला किया जाएगा।

इसी बीच यूरोपीय संघ ने ब्रिटेन को चेतावनी दी कि वह ब्रिटेन से किसी समझौते के बना ही अलग हो जाएगा। यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष डोनाल्ड टस्क के प्रवक्ता ने बताया कि टस्क को इस परिणाम (मतदान के) पर खेद है लेकिन ब्रसेल्स की तरफ से उन्होंने चेताया है कि बिना समझौते के अलग होने से ज्यादा कुछ कर पाना मुश्किल होगा। मे ने सांसदों से ब्रेक्जिट मसौदा योजना को मंजूरी देने की अपील की थी।

उन्हें उम्मीद थी कि यूरोपीय संघ की ओर आखिरी समय में दी गई रियायतों से समझौते को सदन से मंजूरी मिल जाएगी। अधिकतर सांसदों ने इन रियायतों को बिना काम की बताते हुए खारिज कर दिया।

संक्षिप्त

पुलिस पर हमले की कोशिश करने वाले संदिग्ध की मौत

कलमाजू (अमेरिका)। दक्षिण-पश्चिमी मिशिगन में एक प्लाज्मा डोनेशन केंद्र में मंगलवार को पुलिस पर हमले की कोशिश करने वाला व्यक्ति मुठभेड़ में मारा गया। इस दौरान एक अधिकारी भी घायल हो गया। प्राधिकारियों ने यह जानकारी दी। शहर के जनसुरक्षा प्रमुख कारियाना थॉमस ने बताया कि कलमाजू के एक अधिकारी को गोली लगी लेकिन बुलेटप्रूफ वेस्ट पहनने की वजह से उनके जीवन को खतरा नहीं है। थॉमस ने बताया कि एक अन्य अधिकारी ने कई गोलियां चलाईं जिसके बाद संदिग्ध मारा गया। संदिग्ध की पहचान तत्काल उजागर नहीं की गई।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यालयों को बंद करेगी आव्रजन एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका का गृह सुरक्षा मंत्रालय देश से बाहर मौजूद आव्रजन सेवा कार्यालयों को बंद करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसका कहना है कि इन दफ्तरों को बंद करने से जो राशि बचेगी, वह देश के अंदर ही स्थित दफ्तरों में पहले से पड़े काम को बेहतर ढंग से निपटाने में काम आएगी। अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवाओं की प्रवक्ता जेसिका कोलिन्स ने कहा कि एजेंसी अमेरिका के बाहर 20 देशों में स्थित कार्यालयों को बंद करने के लिए अभी चर्चा के शुरुआती दौर में है। ग्रेट ब्रिटेन, मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका, इटली, भारत, फिलीपीन, चीन एवं अन्य देशों में करीब 70 कर्मचारी काम कर रहे हैं। कोलिन्स ने कहा कि देश से बाहर सेवाओं में किसी तरह की बाधा से बचने के लिए एजेंसी विदेश मंत्रालय के साथ करीब से काम करेगी। एमनेस्टी इंटरनेशनल एवं ह्मयूमन राइट्स फर्स्ट समेत कई संस्थानों ने इस कदम की यह कहते हुए आलोचना की है कि अंतरराष्ट्रीय कार्यालयों को बंद करने का मतलब है शरणार्थियों के लिए सेवाओं को कम करना। वहीं, अमेरिकी गृह सुरक्षा मंत्रालय का कहना है कि शरणार्थी सेवाओं से संबंधित काम इससे प्रभावित नहीं होंगे।

आतंकवाद पर चिंता का समाधान करे पाकिस्तान

वाशिंगटन। भारत और अमेरिका ने मंगलवार को पाकिस्तान से कहा कि वह सीमा पार से होने वाली आतंकवादी गतिविधियों से निपटे और आतंकवाद संबंधी वैश्विक चिंता का समाधान करे। विदेश सचिव विजय गोखले और उनके अमेरिकी समकक्ष राजनीतिक मामलों के उप विदेश मंत्री डेविड हैल ने विदेश मंत्रालय के फॉगी बॉटम मुख्यालय में वार्ता की। इसके बाद यहां भारतीय दूतावास ने एक बयान जारी कर आतंकवाद संबंधी चिंता व्यक्त की। बयान में कहा गया, दोनों पक्षों ने पाकिस्तान से अपील की कि वह सीमा पार से होनी वाली आतंकवादी गतिविधियों से निपटे और आतंकवाद को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंता का उचित समाधान करे। दोनों पक्षों ने भारत-अमेरिका रणनीतिक साझीदारी को लेकर अपनी प्रतिबद्धता की पुन: पुष्टि की। दोनों राजनयिकों ने पिछले सितम्बर में हुई मंत्रिस्तरीय 'टू प्लस टू' वार्ता के बाद से हुई प्रगति की समीक्षा की तथा सहयोग को और बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की।

सरकार ने युवाओं का भविष्य किया अंधकारमय

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर में गिरावट एवं खुदरा महंगाई दर में बढ़ोतरी को लेकर बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा और दावा किया कि इस सरकार ने युवाओं के भविष्य में अंधकार फैला दिया है तथा जनता इस निकम्मी सरकार को बदलेगी। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने ट्वीट कर कहा, मोदी जी, न नौकरियां, न रोजगार, युवाओं के भविष्य में फैलाया अंधकार, मेक इन इंडिया का किया बंटाधार! बोरिया बिस्तर बांधने को हो जाइये तैयार, इस बार जनता बदलेगी ये निकम्मी सरकार। वोट की चोट बताएगी,कि भाजपाई हैं जिम्मेवार। गौरतलब है कि औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) की वृद्धि दर जनवरी महीने में धीमी पड़ कर 1.7 प्रतिशत रह गई। विनिर्माण क्षेत्र, विशेष रूप से पूंजीगत सामान और उपभोक्ता सामान क्षेत्र के सुस्त प्रदर्शन की वजह से आईआईपी की वृद्धि दर कम हुई है।

फि ल मी ना मा

आलिया भट्ट को मिली राजामौली की फिल्म

अभिनेत्री आलिया भट्ट को बाहुबली के निर्देशक एसएस राजामौली ने अपनी अगली फिल्म के लिए साइन कर लिया है। आलिया के साथ इस फिल्म में राम चरण और जूनियर एनटीआर भी अहम भूमिका ने होंगे। बॉलिवुड अभिनेत्री अलिया के साथ इस समय हर कोई काम करना चाहता है, वजह साफ है उनका स्टारडम और बेहतरीन अदाकारी। आलिया की प्रसिद्धि साउथ फिल्म इंडस्ट्री में भी खूब है। साउथ में हिंदी फिल्मों के दर्शक आलिया को बहुत पसंद करते हैं। खबर है कि साउथ में आलिया के इस स्टारडम को देखते हुए फिल्म बाहुबली के मेकर राजामौली ने आलिया को अपनी एक फिल्म के लिए साइन कर लिया है। राजमौली की फिल्म 'रामा रावणा राज्यम' के लिए आलिया को मुख्य भूमिका में साइन कर लिया गया है। हालांकि इस बारे में अब तक किसी भी तरह की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। खबरों की मानें तो राजामौली रामा रावणा राज्यम के लिए काफी समय से बॉलिवुड की कई हिरोइन से बात कर रहे थे। उन्होंने कई लोगों को अपनी कहानी सुनाई थी और आलिया ने निर्देशक की कहानी को सुनते ही पसंद भी कर लिया था, लेकिन फाइनल जवाब नहीं दिया था। अब फाइनली आलिया को फिल्म के लिए लॉक कर लिया गया है। आलिया की फिल्म राजी को साउथ में खूब पसंद किया गया था। हालिया रिलीज गली ब्वॉय में भी उनके काम को खूब सराहा गया है। आलिया के लिए साउथ फिल्म इंडस्ट्री में राजामौली जैसे बेहतरीन निर्देशक के साथ काम करने का अवसर भी बड़ा है।

अफगानिस्तान में बम विस्फोट,10 सैनिकों की मौत

काबुल। अफगानिस्तान के दक्षिणी हेलमंद प्रांत में एक बम विस्फोट में एक पत्रकार घायल हो गया। अफगानिस्तान के एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। इस पत्रकार को लंबे समय से धमकियां मिल रही थीं। हेलमंद के गवर्नर के प्रवक्ता उमर जवाक ने बताया कि टीवी एवं रेडियो पत्रकार नेसार अहमद अहमदी जब अपने वाहन से कार्यालय जा रहे थे तभी एक बम विस्फोट हो गया और वह घायल हो गए। यह घटना हेलमंद प्रांत की राजधानी लश्कर गाह में हुई। जवाक ने बताया कि अहमदी का एक पैर जख्मी है और उन्हें इलाज के लिए काबुल भेजा गया है। वह सबाहून रेडियो के संचालक और सबाहून टेलीविजन के रिपोर्टर हैं। इस हमले की तत्काल किसी ने जिम्मेदारी नहीं ली है लेकिन हेलमंद में तालिबान आतंकवादी सक्रिय हैं।वहीं फराह प्रांत के गुलिस्तां जिले में मंगलवार तालिबान ने सेना की एक जांच चौकी पर हमला कर दिया। इसमें 10 सैनिक मारे गए। बाद में सुरक्षाबलों ने इस क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया। इसी तरह फराह प्रांत में बुधवार को एक स्थानीय अधिकारी की हत्या कर दी गई।

राजनीति में महिला प्रमुखों की संख्या में गिरावट

संयुक्त राष्ट्र। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं और आगे बढ़ रही हैं, लेकिन राजनीतिक धरातल पर महिलाओं की स्थिति हतोत्साहित करने वाली है। विश्वभर में राजनीतिक क्षेत्र में मौजूद महिलाओं की संख्या में गिरावट आई है। हाल में जारी आंकड़ों में यह बात सामने आई है।

राजनीति में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत कम है और विश्व के नेताओं में मात्र सात प्रतिशत और सांसदों में केवल 24 प्रतिशत महिलाएं हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा अध्यक्ष मारिया फर्नांडा एस्पिनोसा ने महिलाओं की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग के प्रतिनिधिमंडल को मंगलवार को बताया कि हालिया वर्षों में विश्वभर में राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की संख्या में काफी कमी देखने को मिली है। अंतर-संसदीय संघ के पिछले सप्ताह जारी आंकड़ों के अनुसार महिलाओं के राष्ट्राध्यक्ष चुने जाने का प्रतिशत 2017 के 7.2 प्रतिशत से गिरकर 2018 में 6.6 प्रतिशत रह गया है। इसी अवधि में सरकार में महिला प्रमुखों का प्रतिशत भी 5.7 प्रतिशत से गिरकर 5.2 प्रतिशत रह गया है। अंतर संसदीय संघ की प्रमुख गैब्रीला क्रेवास बैरन ने कहा, कुछ सकारात्मक आंदोलनों के बावजूद सरकारी नेताओं में अभूतपूर्व बहुमत पुरुषों का है। संयुक्त राष्ट्र महिला की कार्यकारी निदेशक फुम्जिले म्लाम्बो नगकुका ने मौजूदा माहौल को महिलाओं के उत्थान के लिए उत्साहवर्धक नहीं बताया। उन्होंने कई देशों में महिला उम्मीदवारों और नेताओं के खिलाफ राजनीतिक हिंसा, मौखिक हमला और सोशल मीडिया के दुरुपयोग का हवाला देते हुए कहा कि, महिलाएं पीछे की ओर हटी हैं।

सूडोकू

		6			9	7	2	4
					2			9
		5				6		
	3		9			2	7	
	1	7			8		4	
		8				9		
1			6					
4	2	9	1			3		

5	6	3	7	8	1	9	2	4
2	8	4	5	9	6	3	7	1
7	1	9	3	2	4	8	6	5
4	5	2	8	3	7	1	9	6
3	9	1	6	4	2	7	5	8
8	7	2	4	5	9	6	1	3
9	4	5	2	1	3	8	6	7
6	3	8	9	7	5	4	8	2
1	6	7	8	6	4	5	3	9

3	4	6	1	7	2	9	8	5
1	9	2	4	8	5	3	7	6
8	5	7	3	9	6	4	1	2
7	8	9	6	5	1	2	3	4
4	6	3	7	2	9	8	5	1
2	1	5	8	4	3	7	6	9
9	2	8	5	1	7	6	4	3
6	7	1	9	3	4	5	2	8
5	3	4	2	6	8	1	9	7

5					8	1	9	
6				3	4		2	
								3
2	1							
			7	2	9			
							3	4
8								
	9		4	8				6
	4	6	1					5

साहित्य

सदी के ज्वलंत मुद्दों की तथ्यपरक पड़ताल

'नान्या' बाल उपन्यास है, जिसका कथानक अत्यंत संक्षिप्त है और पात्र सीमित हैं। इसमें उठाये गये प्रश्न इतने विराट और गंभीर हैं कि उन्हें 21वीं सदी के ज्वलंत प्रश्नों से मुठभेड़ करते देखा जा सकता है। यह उपन्यास सन् 76 में लिखा जा चुका था और प्रकाशित इसी वर्ष हुआ है। इस दृष्टि से इसमें लगभग तीस वर्ष के आजाद भारत को देखा जा सकता है।

उपन्यास के बाल नायक नान्या का गांव की ही लड़की द्वारा बहला-फुसलाकर यौन-उत्पीड़न करना, महात्मा गांधी द्वारा गोरों को भगाना, दादी द्वारा नान्या को सुनाई गयी पौराणिक कथाओं के प्रति जिज्ञासा और अनुभवी दादी द्वारा दिये गये जवाबों में देश के गंभीर और आर्थिक समाधान, पूरे उपन्यास को हिंदी की सहबोली मालवी में लिखा जाना, नन्हे नान्या का गांव लौटते हुए बस से घायल होना, ठेठ देशज और स्थानीय बोली में निर्मित गांव का देसी और सात्विक परिवेश और लेखक की उक्ति, 'जहां आजादी के अड़सठ वर्षों बाद, आज भी कोई मोटर नहीं जाती' जैसे वर्तमान भारत की कलई खोलते प्रश्न इस उपन्यास का ताना-बाना बुन रहे हैं।

कथा मध्यप्रदेश के देवास जिले के पीपलरावां गांव में आकार ग्रहण करती है जहां, नान्या अपने दादा-दादी के साथ रहता है। वह अपने नन्हे कद से बड़ा ही दुखी है। उसका मन खेल-खिलौनों में रमा रहने से दादा ने गुस्से में उसके खिलौने छज्जे पर पटक दिये हैं। उसे दादा जैसा ऊंचे होने की धुन सवार हो गयी है। और तो और, बस्ता टांगने के लिए भी उसे पैर उचकाने पड़ते हैं। चौकी सरकाकर, भगौना औंधा करके उस पर चढ़कर वह बस्ता टांगता है। छज्जे से खिलौने तो उतारने ही उतारने हैं। अक्षर मिलाकर शब्द तो वह पढ़ने ही लगा है। फुर्तीला होने के लिए सुबह-सुबह बकरी का दूध पीने जाता है। प्रेमा ने ऊंचा होने का गुप्त रहस्य उसे इस कसम के साथ बताया है कि ऊंचा होने के लिए जो काम उसने नान्या के साथ किया है उसे वह किसी को न बताए। अन्यथा वह छोटा का छोटा ही रह जायेगा। प्रेमा ने प्रलोभन दिया कि उसने ऊंटनी का दूध पिया है और वह उसे ऊंटनी जैसा ऊंचा बना सकती है। जो-जो प्रेमा कहती जाए उसे वह माने और करे। नान्या प्रसन्न है। उसे ऊंचा होने का नुस्खा हाथ लग गया है। अपने साथ की गयी प्रेमा की करतूत का अर्थ वह नहीं समझ पाता। वह सबको हुमककर बताना चाहता है परंतु छोटा रह जाने का भय और प्रेमा की कसम उसे रोक देती है। पहले भी प्रेमा उसके दांत और बत्तीसी की तारीफ करके कई बार उसे दबोच चुकी है।

इस यौन-उत्पीड़न को अब कहां रखें। यहां तो गांव में यह हरकत एक युवा लड़की कर रही है। तो, पुरुष ही जिम्मेदार क्यों? 'समी टू' का बवंडर जैसे उठा था वैसे ही बैठ भी गया। विदेशों से आकर भारत में पांव जमाने वाला 'स्त्री-विमर्श' अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। सदी में बदल रही सामाजिक-संरचना में अब इसे नया 'काम-विमर्श' कहें तो ही बेहतर होगा।

उपन्यास में दूसरा नया प्रयोग पूरे उपन्यास को मध्यप्रदेश की मालवी में लिखा जाना है। धर्मवीर भारती इसे 'धर्मयुग' में धारावाहिकों में प्रकाशित करना चाहते थे। इस आग्रह के साथ कि इसके देशज शब्दों को तद्भव में कुछ इस तरह ढाल लिया जाए कि पाठक इससे तादात्म्य स्थापित कर सकें। इस उपन्यास में लेखक ने पूरे कथानक का नरेशन ही मध्यप्रदेश के देवास जिले के इंटीरियर गांव पीपलरावां की देशज और स्थानीय बोली में किया है जिस पर गुजराती, राजस्थानी, मराठी और अन्य प्रांतीय बोलियों का प्रभाव है। अब जाकर लेखक बेटे पुनर्वसु ने इसे प्रकाशित कराया है। इस दृष्टि से जरूरी है कि प्रांतीय बोलियों को समझे बिना हिंदी की ताकत को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

कथा में नान्या आजादी के दिन पैदा हुआ है। नयी-नयी जिज्ञासाएं उसकी अंतर्चेतना में पंख खोल रही है। दादी के दिमाग की पेटी में हर परचे के हल हैं। सदी की तीव्रगामी दौड़ में माता-पिता के पास समय ही नहीं है कि बच्चे के सवालों का निपटारा कर सकें। पाठशाला के सहपाठी बोंदू ने जो गुर बताए, उससे वह पूरा ही बदल गया। नान्या क्लास के पीछे बैठने लगा है। कंचे खेलने लगा है।

बोंदू ने पढ़ाया कि शिव की जलहरी पर जल चढ़ाने से वह सांप के मुंह में ताला मार देते हैं। नान्या बेखौफ होकर रात को घने अंधेरे में बोंदू के साथ कुण्डली मारे सांपों के नीचे से गड़ा धन निकालने पहुंच जाता है। नान्या बेहोशी की हालत में घर लाया जाता है। तब दादा-दादी उसे शहर भेज देते हैं। उसकी छोटी बहन शहरी 'एटिकेट' सिखाते हुए उसे गंवार होने का अहसास करा देती है। शहरी हिंदी उसे समझ नहीं आती। ट्रेन देखी नहीं। बिस्कुट देखे नहीं। बेहद भूख लगने पर वह साहब के कुत्ते की रोटी खा जाता है। नान्या का पिता सेरगाम (शहर) में एक एहलकार के काम में सहयोग देता है। रात को उसे अकेले बरामदे में तख्त पर सुला दिया जाता है। नान्या व्यथित होकर बिना रास्ता जाने-पहचाने गांव लौटने की ठान लेता है। इस कवायद में वह मोटर के नीचे आकर घायल हो जाता है। वह स्वयं को दादी की गोद में बैठा पाता है। यही तत्कालीन भारत के शहर और गांव के रिश्तों की तस्वीर है।

उपन्यास की नायिका दादी पढ़ी नहीं हैं परंतु उसकी बातें लाजवाब हैं। गांव छोड़कर शहर भागने वालों पर उसकी गहरी प्रतिक्रिया है, 'जब कुण्डी में पानी, कोठी में नाज, ग्वाड़ा में गाय और हाथ में हरकत-बरकत होय तो गांव का कांकड़ छोड़ हम सेरकाम क्यों जावां?' कृष्ण की कांकर मारकर दही-दूध की मटकी फोड़ने पर दादी कहती है, 'श्रीकृष्ण भगवान नई चाहता था कि गांव को दूध बाहर बिके।' सही है, पहले अपना पेट भर जाये तो दूसरों को दो। मथुरा में दूध-मक्खन नहीं बिकने जायेगा।

कुल मिलाकर उपन्यास की एक-एक ध्वनि और बोल में तत्कालीन भारत प्रतिबिंबित हो रहा है। इसे गहरे रूप में समझने के लिए मालवी शब्दकोश के पन्नों से गुजरना ही होगा।

मीरा गौतम

रचनाकार-अध्येता के बीच की अनुभूतिगत साझेदारी

युवा कवि सन्तोषकुमार तिवारी के कविता - संग्रह फिलहाल सो रहा था ईश्वर को मैं सततक्रम में ही पढ़ गया। 92 कविताओं वाला यह संग्रह बोधि प्रकाशन, जयपुर से सन् 2014 में प्रकाशित हुआ है। सन्तोष तिवारी की व्यक्तिगत जीवन तथा सामाजिक जीवन की विसंगतियों के प्रतिपक्ष में उभरने वाली गहरी संवेदना में पगी कील जैसी कविताएँ मुझे अत्यन्त प्रभावित करती रही हैं। ऐसी कविताओं का एक सुव्यवस्थित संकलन देखना मेरे लिए अनूठे आनन्द का विषय बना।

इस कविता- संग्रह में अनुक्रम की प्रस्तुति के पहले कवि ने चार लाइनों का एक वक्तव्य अंकित किया है जिसका एक हिस्सा यह है कि मैं अपनी कविताओं के जरिये आपके दिलो-दिमाग में बनी तमाम अधबनी कविताओं को साझा करने की कोशिश कर रहा हं । कवि की यह बात हमें इस निष्कर्ष की ओर ले चलती है कि एक सहज मनोदशा में रचयिता तथा अध्येता दोनों ही एक दूसरे के समानधर्ता हो जाते हैं। इससे अनुभूति अधिकाधिक स्वाभाविक लगती है, अभिव्यक्ति अधिक प्राणवान बनती है और सम्प्रेषण सुगम बन जाता है। कवि ने अपनी रचना का समर्पण अपनी दिवंगत हो चुकी मां के प्रति कुछ इस तरह किया है, जिसमें एक बहुत गहरी अन्तर्वेदना हमेशा- हमेशा के लिए समायी हुई है-

मां को, जिसके कन्धे पर बैठकर दुनिया के मेले देखे- अफसोस, आखिरी वक्त उन्हें कन्धा न दे सका। दिवंगत मां के प्रति गहरी अन्तर्व्यथा व्यक्त करने वाली एक कविता भी इस संकलन में है, मां को याद करते हुए -

चाहता था, बीमार मां के साथ
कुछ वक्त गुजारूं।
अम्मा के रोपे पौधों को पानी दूं
बतियाऊं उनसे उनका सुख-दुख
गुलमोहर से पूछूं- अम्मा को
हंसते कब देखा-सच-सच-बतलाना।

फिलहाल सो रहा था ईश्वर शीर्षक से इस संग्रह में दो कविताएं हैं। इनमें यह बात विचारणीय है कि क्या कवि की अनिवार्य सहमति किसी ईश्वरीय सत्ता से या उसके प्रति पूजा भाव रखने वालों से है। फिर प्रधान पुजारी की बात उसे क्यों विश्वसनीय तथा उल्लेखनीय लगी, यह भी सोचना पड़ेगा। एक ही शीर्षक से कई कविताएं प्रस्तुत करने का रिवाज बीते दो-तीन दशकों से देखने में आता है। केदारनाथ- एक , दो, तीन, चार , और डूब गयी टिहरी- एक-दो, मोहल्ला-एक -दो, पंजाब मेल-एक-दो, तथा अपनी ही लहरों से घायल समुन्दर - एक-दो आदि कविताओं के माध्यम से कवि सन्तोष कुमार तिवारी ने भी इस रचना प्रविधि को अपनाया है। फुटपाथ, लड़कियां, ईश्वर की इच्छा, बुद्ध का घर, गौरेया, नये साल पर, कुत्ता, मेरे एजेण्डे में कुछ कविताएं- रस किसना, प्रेम-पांच, दृश्य, जूता, रातें, ठोकर आदि कविताएं इस प्रकार की हैं। इन कविताओं में पायी जाने वाली प्रयोगधर्मी मार्मिकता बहुत ही सधी हुई लेखनी से नि:सृत लगती है। इनमें लड़कियां कविता मुझे शिल्प के मामले में बहुत ही अनूठी लगती है। पुरुष को श्रेष्ठ मानने की रूझान ने लड़कियों को कैसे- कैसे जख्म और तिरस्कार की दशा में डाल दिया है। इसमें लड़की के महत्व की सच्चाई समझने के लिए माता- पिता , भाई- बहन को भी सचेत किया गया है और उन मजनुओं को भी आगाह किया गया है, जो अपसंस्कृति से ग्रस्त तथा बेहद निर्लज्ज भी हैं और जो लड़कियों की अन्त:शक्ति से प्राय: बेखबर भी रहते हैं-

पक्षियों!
उड़ते-उड़ते जब थक जाना
तो बाहें फैलाये वृक्षों का आश्रय लेना
वृक्षों में हरियाली बन
समायी हैं लड़कियां।

लड़कियों में संघर्ष चेतना और शक्तिमत्ता होने के प्रति पूरा विश्वास भी कवि सन्तोष ने अभिव्यक्त किया है-

मजनुओ! तुम भी सुनों
अंगूर का नहीं
ऊन का गुच्छा होती हैं लड़कियां
छूना मत
उलझन में पड़ जाओगे वरना।

एक खास तरह का वक्रोक्तिमूलक भाषा-प्रयोग कवि की गिरना शीर्षक कविता में दिखायी देता है जहं उसने नकारात्मकता का सन्दर्भ परामर्श के बहाने से बेहद श्रेयस्कर बना दिया है। गिरना की ये पंक्तियां इसका साक्ष्य है-

गिरना
जैसे गिरता आम पेड़ से
सूखे खेतों में जैसे गिरता पानी
कभी मत गिरना
गिरते रुपये की तरह
आंखों में गिरने से तो
अच्छा होगा-मर जाना।

वर्ण्य-विषय की विविधता तथा बेहद सरल शब्दावली में अभिव्यक्ति की अद्भुत मार्मिकता रचनाकार सन्तोष तिवारी की खास पहचान बन गयी है। केदारनाथ नाम की लगभग सभी कविताओं में उत्कृष्ट कोटि की पर्यावरण चेतना को प्रस्तुत करने के बहाने विकृत होते जा रहे मनुष्य की क्रूरता तथा संवेदनशीलता की ओर इंगित करने में तथा अपना विक्षोभ प्रकट करने में वे निष्णात दिखायी पड़ते हैं-

बाबा केदारनाथ कांप उठे
गुस्से से आंख तरेर कर बोले
अरे पागलों! कहीं और मनाओं हनीमून
पिकनिक स्पाट की जगह बदलो।

कवि को नन्हीं सी गोरैया की समीपता को गंवा देना मनुष्य के विकास की संभावना को समाप्त कर देने जैसा लगता है-

जस घर में चहचहाना
छोड़ देती गोरैया
उस घर के बच्चे अक्सर
फुदकना और खिलखिलाकर हंसना
भूल जाते।

समकालीन कविता के विकास में बहुत सारी कविताएं ऐसी भी मिलती हैं जो किसी स्पष्ट अर्थ से कुछ न कुछ दूर ही रहती हैं। हमें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि सन्तोष ने इस विसंगति से बचे रहने का सदैव प्रभावी प्रयास किया है।

कविताओं में अपने सोच का समावेश करने में वे प्राय: ऐसी सादगी और चुटीलेपन को वरीयता से अपनाते हैं जो कविता को कभी भी उबाऊ या बोझिल नहीं होने देता। अन्त में केवल वे पंक्तियां उद्धृत करके बात को समाप्त करना चाहूंगा, जो उन्होंने कवि के लिए नामक कविता में रचनाकारों से कही है-यह समय बतियाने का नहीं,

दहाड़ने का है
हे किरतनिया कवि।
मदारीपन छोड़ो
तपती हुई जिन्दगी से
कविता का अभिषेक करो।

पुस्तक-
फिलहाल सो रहा है ईश्वर
-सन्तोष कुमार तिवारी
समीक्षक-डॉ. जनार्दन उपाध्याय
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
के. एस. साकेत पी. जी. कालेज
अयोध्या,